UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

Vol. 47, Issue. 01 : 2022

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

CONTENTS

S.No.	TITLE	PAGE No
1	**AN ANALYTICAL STUDY ON IMPACT OF ONLINE REVIEWS AND RATINGS ON CONSUMER BUYING DECISION** PROF. AUDHESH KUMAR	1
2	**AN EMPIRICAL STUDY ON THE RELATIONSHIP BETWEEN MANUFACTURING FIRM'S LIQUIDITY LEVERAGE AND PROFITABILITY** Mishel Elizabeth Jacob	11
3	***THE FEASIBILITY OF GOAL ON COAL FOR CLIMATE NEGOTIATIONS-THE CASE OF INDIA*** Dr. Sheeba. V .T	18
4	**PRACTICE OF MARRIAGE AND DIVORCE AMONG THE CHRISTIAN COMMUNITY** Dr. G. Suraj	23
5	**THE SURVEY OF PROBLEMS FACED BY COMMERCIAL BANKS IN AGRICULTURAL LENDING IN THENI DISTRICT – THE SPECIAL REFERENCE TO BODINAYAKANUR, CUMBUM AND CHINNAMANNUR BLOCKS** Dr.G.RAJESH	27
6	**कोरबा (छ.ग.) के वृद्धजनों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ** सुशील कुमार गुप्ता	37
7	**CRYPTO CURRENCY TRADING AND ITS PROTEST IN INDIA: AN EMPIRICAL STUDY** Dr.S.Umamaheswari	40
8	**SUBJUGATION OF WIDOW IN CASTE-SOCIETY: A STUDY OF CONTROL OVER SEXUALITY AND LOVE** Sri Akhil Chandra Borah	45
9	**NON-STATUTORY LABOUR WELFARE MEASURES OF PSUs IN KERALA** Dr. Lissy Bennet	49
10	**ENSEMBLE LEARNING APPROACH TO DECISION TREE ALGORITHM FOR THE CLASSIFICATION OF SOIL TYPE AND SUGGESTING SUITABLE CROP CULTIVATION USING MACHINE LEARNING TECHNIQUE** A Zakiuddin Ahmed	55
11	**A STUDY ON THE PROBLEMS OF BORROWERS TOWARDS THE VARIOUS SCHEMES OF TAHDCO IN ERODE DISTRICT OF TAMILNADU** Dr. M. THAMARAIKANNAN	63
12	**JOB SATISFACTION OF PRIVATE COLLEGE TEACHERS (WITH SPECIAL REFERENCE TO COIMBATORE DISTRICT)** Dr.L.Santhi	85
13	**INFLUENCE OF PROFESSIONAL TEACHING STAFF ON COLLEGE OF EDUCATION, PSYCHOLOGICAL AND EMOTIONAL WELL-BEING OF STUDENT -A LITERATURE REVIEW** K.BASKARAN	91
14	**A STUDY ON COLONIAL REVENUE ADMINISTRATIVE MACHINERY IN ANANTAPUR DISTRICT (1800-1930)** Dr. J. Priya	98
15	**FACTORS INFLUENCING CONSUMERS INTENTION TOWARDS ONLINE FOOD AND GROCERY SHOPPING IN VADODARA CITY OF GUJARAT** Ms Sugandha Sinha	104
16	**VIABILITY OF TRAINING AND DEVELOPMENT ON EMPLOYEES'**	113

शोध प्रभा
Shodha Prabha (UGC CARE Journal) ISSN: 0974-8946
Vol. 47, Issue. 01, No.3: 2022

कोरबा (छ.ग.) के वृद्धजनों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ

सुशील कुमार गुप्ता शोधार्थी समाजशास्त्र, डॉ. सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, कोटा बिलासपुर (छ.ग.)
डॉ रीना तिवारी सहा. प्राध्यापक (समाजशास्त्र), डॉ. सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश
देश में तेजी से बदलती सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों, चल रही खुली बाजार नीतियों, अर्थव्यवस्था के उदारीकरण और कई अन्य कारकों ने अंततः सामान्य रूप से लोगों और विशेष रूप से वृद्ध लोगों की सामाजिक एवं वित्तीय स्थिति को बदल दिया है। कुछ हद तक, ये कारक बढ़ते ग्रामीण–शहरी विभाजन और विभिन्न सामाजिक, वित्तीय, धार्मिक या क्षेत्रीय पृष्ठभूमि से वृद्ध व्यक्तियों की वित्तीय स्थिति में असमानता के लिए जिम्मेदार हैं। इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य, इन परिवर्तनों की बारीकियों को समझना है, क्योंकि ये बुजुर्ग व्यक्तियों के जीवन को प्रभावित करते हैं।

कीवर्ड – वृद्धावस्था, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, जीवन, परिवार

प्रस्तावना

वृद्धावस्था एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। बुढ़ापा समस्याओं के बिना नहीं है। वृद्धावस्था में शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है, मानसिक स्थिरता कम हो जाती है; युवा पीढ़ी की लापरवाही के साथ धनबल धूमिल हो जाता है। इस अध्ययन का विषय विभिन्न स्रोतों से जानकारी का एक संग्रह है जो कोरबा में बुजुर्गों की वर्तमान स्थिति के लिए प्रासंगिक है। इस अध्ययन के माध्यम से वृद्धावस्था में होने वाले आर्थिक और सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया ळें

उद्देश्य

वृद्ध व्यक्तियों की स्थितियों पर शोध करने के लिए निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्यों प्रस्तावित किए गए है –

1. वृद्धजनों की होने वाली सामाजिक समस्याओं की पहचान करना।
2. वृद्धजनों की होने वाली आर्थिक समस्याओं की पहचान करना।
3. वृद्धजनों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं के कारर्णो का पता लगाना।
4. वृद्धजनों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का समाधान सुझाना।

पूर्व साहित्य

अहमद, अल्ताफ, और जान (2016) ने अपने शोध ''अकेलापन, आत्म सम्मान और अवसाद के बीच कश्मीर के बुजुर्ग लोग'' में बताया कि उम्र बढ़ने से संबंधित स्वास्थ्य समस्याएं, क्षमताओं का ह्रास और अन्य समस्याएं व्यक्तियों को शारीरिक और मानसिक रूप से प्रभावित करता है। जब वृद्ध लोग स्वास्थ्य समस्याओं, बीमारियों का अनुभव करते हैं, जब वे क्षमताओं में गिरावट का अनुभव करते हैं, जब उन्हें लगता है कि वे अब सक्षम नहीं हैं कुछ भी कर रहे हैं और मुख्य रूप से दूसरों पर निर्भर हैं।

गोविल, और गुप्ता (2016) ने शोध कार्य में बताया कि परिवार के सदस्यों और देखभाल करने वालों के स्वभाव और गतिविधियों में परिवर्तन भी उनकी एक समस्या है। परिवार में अक्सर युवावर्ग में वृद्ध लोगों के खिलाफ समायोजन की कमी, दुर्व्यवहार की समस्याएं देखी गयी हैं। वित्तीय मामले, और संपत्ति विवाद से वृद्ध लोगों के खिलाफ अपराध का प्रसार भी हुआ है।

संयुक्त राष्ट्र, आर्थिक और सामाजिक मामलों का विभाग द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट ''वृद्ध महिलाओं के प्रति उपेक्षा, दुर्व्यवहार और हिंसा'' (2013) में विभिन्न शोषणों का वर्णन किया गया है। जब कोई व्यक्ति वृद्ध व्यक्ति की सहमति के बिना वित्त का उपयोग करने का प्रयास कर रहा हो, तो इसे वित्तीय शोषण कहा जाता है। धन प्राप्त करने के लिए, घर के भीतर भी और घर के बाहर भी वृद्ध लोगों को व्यक्तियों द्वारा नुकसान पहुंचाया गया है। अवैध या वृद्ध व्यक्ति की संपत्ति या वित्त का अनुचित उपयोग या दुरुपयोग वित्तीय शोषण में शामिल हैं। आज के इस आधुनिक युग में कपटपूर्ण कृत्यों, झूठ और धोखाधड़ी द्वारा वृद्धजनों का शोषण किया जाता है।

उपेक्षा को वृद्ध लोगों की आवश्यकताओं और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कार्रवाई की कमी से संदर्भित किया जाता है। भोजन, दवाएं, सहायक उपकरण प्रदान करने में असमर्थता या विफलता, वृद्धजनों की अपेक्षा की पूर्ती न करना कहलाता है। जब उम्रदराज़ लोग प्रायः अकेले रह जाते हैं, वे दूसरों के साथ संवाद नहीं करते। आत्म–उपेक्षा की पहचान उन व्यवहारों के रूप में की जाती है जो वृद्धों के स्वास्थ्य या सुरक्षा के लिए खतरा हैं। किसी भी प्रकार की हानि या बीमारी जिसका वे अनुभव करते हैं, उसके लिए सीमित क्षमता की ओर ले जाती हैं। स्व–देखभाल और स्वास्थ्य चाहने वाली गतिविधियाँ, अवसाद उन पहलुओं में से एक है जो आत्म–उपेक्षा के कारण होता है।

बालामुरुगन, और रामतीर्थम (2012) ने अपने शोध में बताया कि वृद्धजनो का स्वास्थ्य मुख्य रूप से कुछ कारणों से प्रभावित होता है। जब घर के अंदर, परिवार में व्यक्तियों के बीच किसी भी प्रकार का संघर्ष और विवाद होता है, तब वृद्ध

लोग कुछ मामलों में तनावपूर्ण महसूस करते हैं और इन बातों का उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। ये परिस्थितियाँ आमतौर पर व्यक्तियों की मानसिकता को प्रभावित करती हैं। उनके स्वास्थ्य की स्थिति में गिरावट आने लगती है। दृश्य हानि, श्रवण दोष, जोड़ों में दर्द, तंत्रिका संबंधी विकार, कमजोरी, हृदय की शिकायत, दमा, तपेदिक, त्वचा रोग, आदि ऐसी स्वस्थ समस्यायें हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाएं में स्वास्थ्य समस्यायें आमतौर पर अधिक देखि गयी हैं।

लाफर्टी, ट्रेसी, फेली, ड्रेनन, और लियोन, (2012) के शोध "पुराने लोग दुर्व्यवहार और दुर्व्यवहार के अनुभव" में बताया कि लोकप्रिय संस्कृति में नियंत्रण को एक व्यापक अवधारणा के रूप में माना जाता है। किसी के दैनिक जीवन में, जीवन क्षेत्रों में नियंत्रण करने के अवसर हर एक को मिलता है। वृद्ध लोगों को आमतौर पर लगता है कि वे सक्षम नहीं हैं और दूसरे उन पर नियंत्रण और अधिकार का प्रयोग कर रहे हैं। दूसरों के निर्देश और उनके अनुसार रहते हैं।

हेल्प एज इंडिया द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट (2011) के अनुसार जब कोई व्यक्ति अपने समय का प्रभावी उपयोग करने में असमर्थ होता है तब वह ऊब जाता है। समस्या जबरन निष्क्रियता, जिम्मेदारियों से पीछे हटने और व्यक्तिगत लक्ष्य की कमी के कारण होती है। जब कोई व्यक्ति किसी उत्पादक चीज़ में व्यस्त नहीं होता है, तो उसकी प्रवृत्ति शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से कमजोर होती है। जब वे अपने कौशल और क्षमताओं का उपयोग करने में असमर्थ होते हैं, तो बोरियत होती है, उनके लिए बड़ी यह एक बड़ी समस्या है। दूसरी ओर, जब वे किसी चीज़ में व्यस्त हो जाते हैं जैसे आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को मुफ्त ट्यूशन प्रदान करना, समाज के वर्गों में अन्य कार्य करना, तब वे व्यस्त अथवा खुशहाल महसूस करते महसूस करते हैं।

शोध प्रविधिः–

इस शोध के लिए जनसंख्या के रूप में कोरबा (छ.ग.) के समस्त वृद्धजनों को लिया गया है। मिश्रित प्रतिचयन पद्धति द्वारा 200 वृद्धजनों का चयन किया गया है जिन्हें दो वर्गों में बॉटा जिसमें 100 पुरूष एवं 100 महिलाएँ शामिल की जाएंगी। आंकडो के संकलन के लिए पूर्व के शोध अध्ययनों में इस्तेमाल किये गये साक्षात्कार प्रश्नावली में अपने अध्ययन के अनुसार परिवर्तन कर उपयोग किया में लाया गया है।

साक्षात्कार प्रश्नावली से कर प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया जाएगा। प्रस्तुत शोध द्वितीयक समंकों पर भी आधारित हैं। द्वितीयक समंक प्रकाशित रिपोर्ट, प्रतिवेदनों, व्यवसायिक पत्रिका संदर्भित प्रकाशित एवं अप्रकाशित स्त्रोत, कार्यालयीन एवं विभागीय पत्र पत्रिकाओं, संरक्षित अभिलेखों, ऑकड़ों को एकत्रित कर उनका उपयोग व विश्लेषण यथास्थान किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

200 लोगों में 54 वृद्ध 60 से 65 वर्ष आयु वर्ग के है, 61 वृद्ध 65 से 70 वर्ष के है, 48 वृद्ध 70 से 75 वर्ष के है और 37 वृद्ध 75 से अधिक आयु वर्ग के है। कुल उत्तरदाताओं में से 100 पुरूष और 100 महिलाएँ है। यह शोध में महिलाओं और पुरूषों की समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए किया गया है। 113 ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते है और 87 उत्तरदाता शहरी क्षेत्रों में निवास करते है। 71 उत्तरदाता संयुक्त परिवार में रहते है और 129 उत्तरदाता एकल परिवार में जीवनयापन कर रहें है। 59 लोग पराश्रित है, 61 लोग मजदूरी करते है, 36 लोग नौकरी करते है, 23 का स्वरोजगार है और 21 लोग पेंशन एवं अन्य स्त्रोतों पर निर्भर है

अधिकांश वृद्धजनों के पास चिकित्सा सेवाएं/सुविधाएं उपलब्ध नही हैं। वे सामाजिक सुरक्षा योजनाओं पर निर्भरता रखते हैं। इनमें से अधिकतर व्यक्ति वित्तीय स्वतंत्रता महसूस नहीं करते है। शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रहे वृद्धों की स्थिति आज भी बिगड़ी हुई है। वृद्धजनों का अधिक खर्च स्वयं के स्वास्थ्य देखभाल पर होता है।

शोध में यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में बुजुर्ग अपने शहरी समकक्षों की तुलना में अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं। वृद्ध महिलाओं में वृद्धावस्था में वित्तीय असुरक्षा की भावना अधिक होती है। प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि वर्त्तमान में वे अकेलेपन के कारण मानसिक तनाव से गुज़र रहे हैं। वृद्धजनों को परिवार के युवाओं से तालमेल बिठाने में कठिनाई आती है।

आज के युग में सामाजिक परिवर्तनों के कारण नैतिक आधार व्यवस्था के परिवर्तन समझना कठिन है इस बात से अधिकांश वृद्धजन पूरी तरह से सहमत हैं। आधुनिक भौतिकवादी युग में अर्थ/पैसे की प्रधानता जीवनचर्या को प्रभावित कर रही है।

वृद्धजनों को प्रायः आर्थिक तंगी संबंधी तनाव का भी सामना करना पड़ता है। पारिवारिक आय कम होने से परिवार के लोग इन्हें बोझ समझने लगे है। इससे पारिवारिक उत्तरदायित्वों की स्थिति प्रभावित हो रही है। वृद्धजनों की आर्थिक पराश्रयता बढ़ी है तथा आर्थिक दशा गिर रही है।

वृद्धजनों को अनेक प्रकार की शारिरीक दुर्बलता और बिमारियों का सामना करना पड़ता हैं। कमजोर पड़ने के बाद वृद्धजन मानसिक रूप से भी स्वयं को बहुत असहाय महसूस करते हैं। संयुक्त परिवार के आभाव में देखभाल की समस्या का सामना कर रहे हैं। उन्हें समाज में अवहेलना का सामना करना पड़ रहा है।

पश्चिमी संस्कृति के प्रवेष होने के कारण वृद्धजनों का घर व समाज में अनादर होता है। कुछ परिवारों में वृद्ध अपने परिवार व बच्चों पर ज्यादा निर्भर हैं। और इस समय घर के युवा उन्हें घर व परिवार से अलग करने की रणनीति बनाने लगे हैं। वृद्धजन पराबलंबन की भावना की समस्या से ग्रसित होने लगे हैं।

सुझाव

अधिकांश वृद्धजनों के पास चिकित्सा सेवाएं/सुविधाएं उपलब्ध नही हैं। उन्हें चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवानी चाहिए। ये चिकित्सा सुविधा उन्हें उनके परिवार के सदस्य तथा शासन की ओर से मिल सकती है।

वे सामाजिक सुरक्षा योजनाओं पर निर्भरता रखते हैं। परिवार के सदस्यों को वृद्धजनों को घर का मुख्य सदस्य मानते हुए सामाजिक योजनाओं पर आश्रित नहीं होने देना चाहिए।

वित्तीय स्वतंत्रता के लिए सभी को अपने वृद्धावस्था के लिए अभी से बचत करनी चाहिए और क्षमता अनुसार कार्य वृद्धावस्था में भी करना चाहिएं।

परिवार के सदस्यों के सहयोग से अकेलेपन और मानसिक तनाव से गुज़र रहे वृद्धजनों की मदद की जा सकती है।

वृद्धजनों को अनेक प्रकार की शारिरीक दुर्बलता और बिमारियों का सामना करना पड़ता हैं। कमजोर पडने के बाद वृद्धजन मानसिक रूप से भी स्वयं को बहुत असहाय महसूस करते हैं। समय के साथ साथ अपने स्वास्थ्य की देखभाल करना सभी की जिम्मेदारी होती है। अतः योग, प्राणायाम तथा अन्य माध्यमों से खुद को स्वस्थ रखना चाहिए और अपने आस–पास के क्षेत्र को भी स्वच्छ रखना चाहिए।

संयुक्त परिवारों में पाया गया है कि वृद्धजनों को उतनी समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता इसीलिए छोटी–छोटी बातों को लेकर एकल परिवार का निर्णय नहीं करना चाहिए।

सन्दर्भ –

- अग्रवाल, गि. (2004), वृद्धावस्था की कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 115–116.
- अहमद, ए., अल्ताफ, एम., और जान, के. (2016), अकेलापन, आत्म सम्मान और अवसाद के बीच कश्मीर के बुजुर्ग लोग, द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 3(4),147–153
- अग्रवाल, उ.च., (2006) ''वरिष्ठ नागरिकों की बढ़ती संख्या'' कुरूक्षेत्र.
- अग्रवाल, उ.च., (2007) ''माता–पिता और वरिष्ठ भरण–पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007
- गोविल, पी., और गुप्ता, एस. (2016), बुजुर्ग लोगों के खिलाफ घरेलू हिंसा एक मामला, भारत का अध्ययन। एजिंग रिसर्च में अग्रिम, 5, 110–121
- बालमुरुगन, जे., और रामतिर्थम, जी. (2012), वृद्ध लोगों की स्वास्थ्य समस्याए, आई जे आर एस एस, 2(3),139–150
- राष्ट्रीय वृद्ध नीति, राष्ट्रीय वृद्धजन शिक्षा संसाधन केन्द्र, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- लाफ़र्टी, ए., ट्रेसी, एमपी, फ़ीली, जी., ड्रेनन, जे., और ल्योंस, आई. (2012), पुराने लोग दुर्व्यवहार और दुर्व्यवहार के अनुभव। वृद्धों के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय केंद्र पीपल (एनसीपीओपी) यूसीडी स्कूल ऑफ नर्सिंग, मिडवाइफरी एंड हीथ सिस्टम्स
- वृद्ध महिलाओं के प्रति उपेक्षा, दुर्व्यवहार और हिंसा। आर्थिक और सामाजिक मामलों का विभाग की रिपोर्ट, संयुक्त राष्ट्र, (2013)
- शर्मा, स्व., (2014) वृद्धावस्थाः बागबाँ से आगे, बुका होलिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0 11–16
- शिन्चाल, विनीता (2014) वृद्धावस्था : नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृ0 45–47
- हेल्प एज इंडिया रिपोर्ट (2011)